SRNK GOVT. DEGREE COLLEGE, BANSWADA

KAMAREDDY (DIST.), TELANGANA.

(AFFILIATED TO TELANGANA UNIVERSITY)

NAAC ACCREDITED WITH 'B' GRADE

JIGNASA 2017-18

STUDENT STUDY PROJECT

DEPARTMENT OF HINDI

TITLE: " प्रेमचंद जी की साहित्य समालोचन "

SUBMITTED BY:

1. 1705-5034-445-523 J.TIRUPATHI BZC(T/M) I YEAR
2. 1705-5034-445-548 S.RANJITHA BZC(T/M) I YEAR
3. 1705-5034-445-556 V.LAXMI BZC(T/M) I YEAR
4. 1605-5034-445-528 K. MOUNIKA BZC(T/M) II YEAR
5. 1605-5034-445-501 A.SPANDANA BZC(T/M) II YEAR

GUIDED BY:

P. RAVIRAJ

ASST. PROF OF BOTANY

SRNK GOVT. DEGREE COLLEGE, BANSWADA

प्रेमचन्द जी की साहित्य समालोचना

प्रस्तावना:

हमारे हिन्दी साहित्य के महान विभूति, श्री प्रेमचन्द-जी जन्म सन् 1880 ई में बनारस के पाँडेपुर ग्राम के एक छोटे से पुरवा "लमही" में एक कुलीन कायस्थ परिवार में हुआ। उनका यह पुनीत जन्म - स्थान वाराणसी से लग भग पाँच-छः मील दूर है। इनके पिता का नाम अजायबराय और पूज्या माता का नाम आनंदी देवी था। परिवार का मुख्य व्यवसाय कृषि था। जिससे पालन-पोषण के लिए उपयुक्त आय नहीं हो पाती थी। अन्त में इनके पिता को विवश होकर डाकखाने में बीस रुपये मासिक की क्लर्की करनी पड़ी। श्री प्रेमचन्द के जन्म के समय वे इसी नौकरी में थे। निर्धनता के कारण परिवार का पालन-पोषण बड़ी कठिनाई से होता था।

बाल्यकाल से ही विषम परिस्थितियों की अनुभूति:

बाल्य काल में उनको पढ़ाई करने की विशेष सुविधा नहीं थी इस कारण वे आगे पढ़ाई करने के लिए कठिनाई थी। सभी कठिनाईयों सामना करते हुये उन्होंने अपनी पढ़ाई कायम रखी। प्रेमचन्द छोटी-सी कामनाएँ भी पूर्ण नहीं होती थी। इस कारण उन्हें अनेक प्रकार समस्याओं से गुजरते थे पढ़ाई जारी रखी।

रह जाती थी। अपूर्ण अभिलाषाओं को इन दरिद्रताजन्य जीवन परिस्थितियों से जूझते हुए वे जीवन-पथ पर अग्रसर होते चले गये। जीवन की इन विषम परिस्थियों ने इन होनहार कथाशिल्पी की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। जीवन की इन विषम परिस्थितियों ने इन होनहार कथाशिल्पी की पृष्ठभूमि तैयार करदी। समय आने पर जीवन का यह कटु यथार्थ उनके कथा-शिल्प का मर्मस्पर्शी प्रतिपाद्य बना।

अल्पायु में ही मातृ तथा पितृ-स्नेह से वंचित —

श्री प्रेमचन्द की तीन बहने थी। दो की अकालमृत्यु हो गई और एक बहुत दिनों तक जीवित रही। जब प्रेमचन्द आठ वर्ष के ही थे, उनकी वात्सल्यमयी माता आनन्दी देवी छः मास रुग्ण-शय्या पर रहने के पश्चात दिवंगत हो गई। इस प्रकार वे अल्पायु में ही मातृ-स्नेह से वंचित हो गये। प्रेमचन्द का बचपन का नाम धनपतराय था, किन्तु इनके चाचा इन्हे नवाबराय के नाम से पुकारते थे। प्रेमचन्द का पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही विवाह हो गया, किन्तु दाम्पत्य जीवन सुखद न रहा। इनकी पत्नी इनसे अवस्था में बड़ी और अत्यन्त कुरूप थी। इसके अतिरिक्त वह जबान की तेज-तर्रार और कलह-प्रिय थी, जिससे घर विषाद-मग्न रहता था। अन्त में प्रेमचन्द ने उनका परित्याग कर शिवरानी से विवाह कर लिया। शिवरानी बाल-विधवा थी। सोलह वर्ष की अवस्था में प्रेमचन्दजी के ऊपर से पिता का साया भी उठ गया। बेचारे प्रेमचन्द अल्पायु में ही मातृ तथा पितृ-स्नेह से वंचित होगये।

शिक्षा-दीक्षा:- पाँच वर्ष अवस्था में शिक्षा का प्रारम्भ एक मौलवी साहब के पास हुआ। पुरानी पीढ़ी के पिता ने उर्दू में अभिरुचि होने के कारण उर्दू की शिक्षा दिलाई। धीरे-धीरे प्रेमचन्द का इस भाषा पर अधिकार होने लगा। चार वर्ष के बाद उनके पिता की जमनिपुर में बदली हो गई। आर्थिक अभाव से पीड़ित पिता ने वहाँ डेढ़ मासिक का एक बहुत ही गन्दा मकान किराये पर लिया। मकान इतना गन्दा था कि प्रेमचन्द वहाँ न रह पाते और एक तम्बाकू वाले के मकान में चले जाया करते थे। त्रयोदश वर्षीय प्रेमचन्द को मिशन स्कूल की छठी कक्षा में प्रवेश दिलाया गया। पन्द्रह वर्ष की अवस्था में काशी आ गये, जहाँ वे नवीं कक्षा में पढ़ने लगे। इसी बीच उनके पिता की मृत्यु हो गई और उनके ट्यूशन द्वारा जीवन-निर्वाह का आश्रय लेना पड़ा। प्रातः बेला में वे पाँच-छः मील पैदल चलकर शहर पहुँचते, पढ़ाई के पश्चात् ट्यूशन करते और फिर पैदल ही रात के आठ बजे तक घर लौटते। प्रेमचन्द तेल की कुप्पी जलाकर पढ़ते थे और जो कुछ रूखा-सूखा मिल जाता, उसे ही खाकर सन्तुष्ट रहते थे। इन कष्टमय परिस्थियों में भी अन्त में द्वितीय श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करली। किन्तु इतने पर भी जीवट इतनी थी कि उन्होंने कठिनाइयों के सामने घुटने नहीं टेके और इण्टर की

सरकारी नौकरी से त्यागपत्र ; सन् 1920 में प्रेमचन्द ने सरकारी नौकरी को त्याग पत्र दिया। जब वे सब-डिप्टी इन्स्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे। सम्पूर्ण देश का दौरा करते हुये महात्मा गाँधीजी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर तुरन्त सरकारी नौकरी पत्र से त्याग पत्र दिया। फिर भी सरस्वती वरद् पुत्र साहित्य साधना तत्पर रहे।

प्रेमचन्द की साहित्य साधना में रुचि : प्रेमचन्द साहित्य साधना बड़े अनुरागी थे। वे हमेशा साहित्य अध्ययन करते रहते थे। उनकी पत्नी शिवरानी के कथनानुसार बचपन से ही उन्हें पढ़ने-लिखने की रुचि थी। एक तम्बाकू व्यवसायी का लड़का उनका मित्र था। वे उसकी दुकान पर तम्बाकू के पिण्डे के पीछे बैठकर "तिलस्म होशरुबा पढ़ा करते थे।

साहित्य-सृजन का श्रीगणेश : उर्दू से साहित्य को साहित्य-सृजन का केन्द्र बनाया। कथा साहित्य की ही प्रमुख विधा उपन्यास-लेखन से उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का समारम्भ किया। सन 1901 ई. में उन्होंने "प्रेमा" नामक एक उपन्यास उर्दू में लिखा। इसके पश्चात् अन्य अनेक उपन्यास लिख डाले। सन् 1904 ई. में उन्होंने कहानी रचना का कार्य भी प्रारंभ कर दिया। उस समय श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कहानियाँ अत्यंत लोकप्रिय थी।

प्रेमचन्द की प्रमुख कहानिया निम्न प्रकार से है—

1) पूस की रात
2) कफन
3) सद्गति
4) नमक का दारोगा
5) सुभागी
6) बड़े घर की बेटी
7) बूढ़ी काकी
8) पंच परमेश्वर
9) परीक्षा
10) मुक्तिधन
11) सद्गति
12) ईदगाह

साहित्य के क्षेत्र में लगभग प्रेमचन्द बारह उपन्यास लिखे है।

(1) सेवासदन : प्रेमचन्द ने जीवनी - लेखकों के आधार पर श्रीमहावीर प्रसाद पोद्दार की प्रेरणा "सेवासदन" नामक उपन्यास ~~लिखा~~ हिन्दी में लिखा और तब से वे निरन्तर हिन्दी में लिखते चले गये। इसके पश्चात् उन्होंने "रूठी रानी" वरदान और प्रतिज्ञा आदि उपन्यासों की रचना की। इन्हें 1900 ई से 1906 ई के बीच की रचनाये माना गया है। गोरखपुर में सन् 1916 ई. में प्रकाशित किया गया। "सेवासदन का उर्दू रूप "बाजार-हुस्न" लाहोर से सन् 1911 ई के मध्य में दो किस्तों में प्रकाशित हुआ था।

(2) प्रेमचन्द का दूसरा उपन्यास : प्रेमाश्रम इस उपन्यास रचनाकाल सन् 1918 ई. है, किन्तु इसका प्रकाशन सन् 1922 ई में कलकत्ता से हुआ। उपन्यास की सम्पूर्ण कथा ज्ञानशंकर और प्रेमशंकर नाम के दो बिन्दुओं से संचालित होती है। उपन्यास में कथा - विकास की अनेक विधियों का प्रयोग किया गया है।

डॉ. कमलकिशोर गोयनका के शब्दों में कह सकते है कि " निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अपनी कुछ दुर्बलताओं के होने के कारण भी प्रेमाश्रम का प्रकाशन हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में ऐतिहासिक घटना है।

(3) रंग-भूमि – इसकी रचना तिथि सन् 1924-25 ई. है। इसका प्रकाशन सर्व प्रथम लखनऊ में हुआ था। रंग-भूमि की सृजन प्रक्रिया और उस की आधारभूमि को समझने के लिए लेखक द्वारा अंग्रेजी की व्यावसायिक सभ्यता, मशीनी युग औद्योगीकरण, शासन-नीति, देशी राज्य द्वारा लिबरल दल स्वदेशी उद्योग ग्राम्य जीवन आदि विचारों को देना आवश्यक है।

(4) कायाकल्प: इसका प्रकाशन सन् 1930 ई में हुआ। यह प्रेमचन्द सर्व प्रथम उपन्यास है, जिस की मूल पांडुलिपि हिन्दी में प्राप्त होती है। कायाकल्प की कथा दो विभिन्न एवं स्वतंत्र कथाओ से निर्मित नही हुई है, जैसा कि " कायाकल्प के आलोचकों ने समझा। उसकी कथा केन्द्र बिन्दु एक ही है। कायाकल्प की कथा छः परिवारो की कथा है। जिनमें यशोदानन्दन और ख्वाजा महमूद के परिवारो को छोड़कर शेष चार परिवारों का मुख्य कथा से सम्बन्ध है। उपन्यास की मुख्य कथा चक्रधर की कथा है।

1927 ई. इसका लखनऊ से प्रकाशन हुआ था।

"निर्मला" मध्यवर्गीय समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचन्द ने समाज-चित्रण के अन्तर्गत समस्या-चित्रण का पूरा ध्यान रखा है। इस उपन्यास मे ~~अने~~ अनमेल विवाह और दहेज की समस्या पर दृष्टिपात किया है। दहेज और अनमेल विवाह का पारस्परिक सम्बन्ध दिखलाकर उन्होंने उन कुप्रथाओ को व्यापक सामाजिक दुष्प्रभाव के रूप में प्रकट किया है। उपन्यास की समस्या कथा में बडी कुशलता से पिरोई गयी है। निर्मला की माँ दहेज न दे सकने के कारण उसका विवाह तोताराम के साथ करती है। तोताराम आयु में निर्मला के पिता के समान है।

(6) <u>प्रतिज्ञा</u>: चाँद पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हो चुकने के एक मास पश्चात् ही जनवरी सन् 1927 ई. से प्रतिज्ञा "उपन्यास" धारावाहिक रूप से छपना प्रारम्भ हो गया था। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने अपने 20 वर्ष पुराने उपन्यास प्रेमा के कथानक को आधार बनाया और उन्ही पात्रों को लेकर उपन्यास की रचना की। - कहानी के रूप में प्रस्तुत की गई है। इसी के अन्तर्गत प्रेमा और पूर्णा की कथाएँ आती है।

(7) <u>गबन</u>: इसका प्रकाशन सन् 1930 ई में हुआ।

(8) कर्म-भूमि : इसका प्रकाशन सन् 1932 ई में हुआ।

कर्म-भूमि का प्रणयन गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन और उत्तर प्रदेश के किसानो के लगानबन्दी आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर हुआ है। कर्मभूमि की रचनाओं के कुछ ही समय पूर्व 1928 में बारदोली के किसानों का आन्दोलन सफलतापूर्वक समाप्त हो चुका था।

(9) गोदान : गोदान प्रेमचन्द सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसका प्रकाशन वर्ष 1936 ई. में बनारस से हुआ। जमींदारी द्वारा शोषण के अन्तर्गत जमींदार उसके कारिन्दे आते हैं, महाजनी शोषण का भी बड़ा चित्रण "गोदान" में हुआ है।

10. मंगलसूत्र : प्रेमचन्दजी का अंतिम और अधूरा उपन्यास है। सं 1936 ई. रचना कर रहे थे प्रेमचन्दजी की मृत्यु हो गयी मंगलसूत्र अधूरा रह गया। परन्तु मैंने मंगल को किसी लेखने पूर्ण किया मंगल सूत्र पढ़ा है।

11. मंगलाचरण : अर्थ-रचनाएँ क्रमबद्ध किस तरह प्रकाशित किया जाता है जैसे किसी महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए शुभ घड़ी देखकर उसे मंगलाचारण होता है। यहाँ पर प्रेमचन्द का "मंगला-चरण" उपन्यास लिखा है।

अन्य प्रमुख :- कुछ शीर्षक : रूठी रानी, सं 1907 ई किसना। सन 1908 ई, "जमाना" इनका सप्ताहिक उर्दू पत्रिका है। वरदान, प्रेमचन्द काफी महत्व पूर्ण रचनाओ में से एक है।

उपसंहार : हिन्दी साहित्य के इतिहास में अगर कोई लेखक बनना चाहता है तो वह प्रेमचन्द के बाद होंगे। प्रेमचन्द जी की कहानियाँ ~~यथार्थता~~ यथार्थता दर्पण है। वह अपने दिमाग से आये विचारो को कहानी का रूप देते है, प्रेमचन्द की तरह कहानीकार, उपन्यासकार "न भूतो न भविष्यति" प्रेमचन्द जैसा यथार्थ वादी साहित्यकार साहित्य मिलना न मुमकिन है

मार्गदर्शक
आलेखरचना : श्री. राजपाल.
श्रीरामनारायण केडियाँ
सरकारी स्नातक, महाविद्यालय
बान्सवाडा, जि. कामारेड्डी